arunjaity1:arunjaity.qxd 9/26/2010 9:05 PM Page 144

अरुण जेटली

गतिशीलता, असीमित

संघ परिवार की भट्टी में तपे होने के साथ-साथ अद्भुत गतिशीलता के प्रतीक नानाजी में वह योग्यता थी कि जिसके बल पर उन्होंने दलगत सोच की सीमाओं को लांघ कर राष्ट्रीय हित से प्रेरित होकर अपनी आवाज बुलंद की। इस योग्यता के कारण ही वह जेपी आंदोलन को संगठित करने वाले मुख्य व्यक्ति बन सके।

The Indian EXPRESS

Kindling a movement

Nanaji Deshmukh was a tireless volunteer, till the very end

नानाजी देशमुख का देहांत 94 वर्ष की उम्र में हुआ। वह अपने जीवन के अंतिम क्षण तक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक थे। एक पूर्णकालिक कार्यकर्ता। नानाजी जैसा मिलनसार स्वभाव और उत्साह बहुत ही कम लोगों में होता है। देश के कोने-कोने की यात्रा उन्होंने की थी। वह भारतीय जनसंघ के संस्थापकों में से थे। उनके जैसी पृष्ठभूमि वाले अधिकांश लोग हमेशा एक सीमित समूह में मर्यादित रहते हैं, लेकिन नानाजी हमेशा एक कदम आगे बढ़ने की चेष्टा करते थे। अन्य राजनैतिक दलों, उद्योगों, मीडिया और नागरिक समाज के कार्यकर्ताओं के साथ उनके अभिन्न मित्रों वाले संबंध थे। उन्होंने कभी भी अपने मन की बात कहने में संकोच नहीं किया, भले ही वह बातें उनके अपने राजनैतिक संगठन की आलोचना क्यों न करती हों। उनमें वह योग्यता थी कि दलगत सोच की सीमाओं को लांघ कर सिर्फ राष्ट्रीय हित से प्रेरित होकर अपनी आवाज बुलंद की जाए।

मैं नानाजी से पहली बार तब मिला, जब मैं एक कॉलेज छात्र था। वह दीनदयाल शोध संस्थान में छत पर बने कमरों में रहते थे। जनसंघ के मुख्य संगठन पदाधिकारी होने के बावजूद वह नाममात्र के कर्मचारी रखते थे। संसाधन जुटा सकने की अपनी क्षमता का इस्तेमाल उन्होंने दीनदयाल शोध संस्थान को स्थापित करने में किया था। उनकी अपनी जरूरतें बहुत सीमित थी। उनका निवास आगंतुकों से भरा रहता था। आपातकाल लागू होने के पहले, 1973-75 के दौर में, एक छात्र की हैसियत से मैं उनके पास नियमित जाता रहता था। पटना में हुए जबरदस्त प्रदर्शन के दौरान वह जेपी के साथ थे। लाठी के एक वार से जेपी को बचाने की कोशिश में उनके हाथ में चोट आ गई थी। जेपी आंदोलन को संगठित करने वाले वह मुख्य व्यक्ति थे। उन्हें जेपी का विश्वास प्राप्त था और वह सर्वोदय आंदोलन और गांधी शांति प्रतिष्ठान में जेपी के सहयोगियों के साथ नजदीकी संपर्क में थे। रामनाथ गोयनका, गंगाशरण सिंह और नानाजी सरीखे जेपी के नजदीकी मित्रों ने आंदोलन का दिशा-निर्देशन किया। इन तीनों ने मिल कर सारे गैरकम्युनिस्ट विपक्ष को जेपी के समर्थन में लाकर खड़ा कर दिया। आपातकाल के दौरान वह आपातकाल के विरुद्ध बनी संघर्ष समिति के सचिव पद की स्वाभाविक पसंद थे। उन्होंने अपनी शक्ल सूरत ऐसे बदल ली थी कि कोई उन्हें आसानी से पहचान नहीं सकता था। उन्होंने अपना चिर-परिचित धोती-कुर्ता छोड़कर और उसकी जगह बुशर्ट और पैंट अपना लिया था। उन्होंने मूँछें बढ़ा ली थीं, सिर पर काले किए गए घने बालों के साथ चश्मा भी बदल लिया था। भूमिगत गतिविधियों को संगठित करने के लिए वह देश भर की यात्रा करते रहे। उनके राजनैतिक सहयोगी विभिन्न घरों में उनके ठहरने की व्यवस्था करते थे। आपातकाल के चरम दिनों में, वह दिल्ली के सफदरजंग डेवलपमेंट एरिया में एक सुरक्षित मकान में रह रहे थे। यहां तक कि उन्हें ठहराने वाला भी नहीं जानता था कि वह हैं कौन। पंजाब प्रदेश जनसंघ के एक नेता कृष्णलाल शर्मा अपने एक साथी के साथ उनसे मिलने आए। पंजाब पुलिस की गुप्तचर शाखा के अधिकारी उनका पीछा कर रहे थे। कृष्णलाल शर्मा और उनके साथी की गिरफ्तारी के सिलसिले में दिल्ली पुलिस ने उस घर की तलाशी ली, जहां नानाजी ठहरे हुए थे। वहां उन्हें एक और व्यक्ति मिला जिसे दिल्ली पुलिस पहचानती नहीं थी। उन्हें पुलिस थाने ले आया गया, जहां उन्होंने अपनी पहचान नानाजी देशमुख के तौर पर स्वीकार की। नानाजी के फोटोग्राफों से मिलान करने पर वह कोई और नजर आते थे, लेकिन आवाज से समानता का पता चलता था। एक बार गिरफ्तार किए जाने के बाद वह तिहाड़ जेल लाए गए, जहां वार्ड नंबर 17 में कुछ अन्य साथियों के साथ उस समय मुझे रखा गया था। जब मैं वार्ड में घुसा, तो नानाजी को हमारे साथ मजाक करने की सूझी। कुछ मिनट तक उन्होंने अपनी पहचान जाहिर नहीं की।

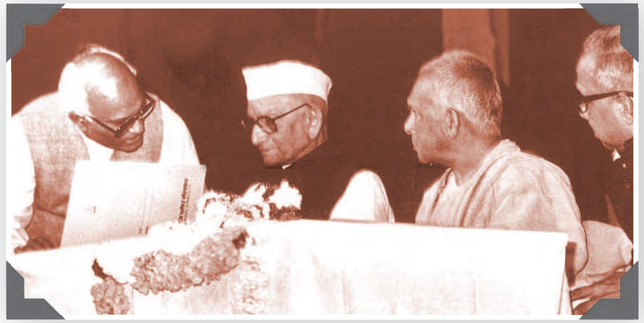

उनकी आवाज सुनकर यह पहचानने में हमें थोड़ा समय लगा कि यह नानाजी देशमुख हैं।

जेल में मुझे उनमें एक अद्भुत व्यक्ति के दर्शन हुए। वह पूरी तरह निश्चिंत थे, काफी ज्यादा पढ़ते रहते थे और राजनैतिक स्थिति का विलेषण करते थे। वह कुछ वामपंथी झुकाव वाले बंदियों से भी मित्रवत हो गए थे। हमारे साथ जेल में बंद किए गए कतिपय वामपंथी कार्यकर्ताओं के परिवारों की वित्तीय मदद करने के लिए उन्होंने जेल के बाहर संदेश तक भिजवाए। जेल में मुझे नानाजी की भोजन संबंधी पसंद का अंदाजा हुआ।

1977 में नानाजी लोकसभा में आए, लेकिन कैबिनेट मंत्री बनने का प्रधानमंत्री का प्रस्ताव सिरे से ठुकराकर, वह संगठन के लिए काम करना चाहते थे। जनता पार्टी के वह मुख्य संगठनकर्ता थे ही। जनता पार्टी प्रयोग की असफलता और उसके बाद जनता पार्टी के विघटन ने उन्हें काफी उदास कर दिया। वह निराश थे। यह घोषणा करके उन्होंने दुनिया भर को हैरान कर दिया था कि वह 60 की उम्र में राजनीति से सन्यास ले रहे हैं। अधिकांश लोग मानते थे कि बाकी लोग उनको अपने निर्णय पर पुनर्विचार करने के लिए मना लेंगे। वह अपने निर्णय पर डटे रहे और 60 की उम्र के होने के दिन के बाद से उन्होंने कभी पलट कर राजनीति की तरफ नहीं देखा। दीनदयाल शोध संस्थान के अलावा अपने जीवन के बाकी 34 वर्ष उन्होंने ग्रामीण सुधार के लिए संस्थानों, गोंडा, बलरामपुर और चित्रकूट में आदर्श ग्रामों और शिक्षा केन्द्रों का निर्माण करने में लगाए। इस प्रयास में योगदान करने के लिए उन्होंने कई लोगों को प्रेरित किया। उन्होंने जिस क्षेत्र में काम किया, वहां हजारों लोगों के जीवन को प्रभावित किया। 1999 में मैंने उन्हें एक बार फिर 6 वर्ष तक राज्यसभा के मनोनीत सदस्य की हैसियत से देखा। सदन में उनके सारे हस्तक्षेप गैर दलीय और राजनीति की गहरी समझ रखने वाले की भांति थे।

नानाजी की गतिशीलता अद्भुत थी। वह आदर्शवाद की छाया से ओतप्रोत थी। वह जो कहते थे, उस पर अमल करते थे। जीवन भर उन्होंने अनेक व्यक्तियों को स्वयं से जोड़ा। आज भी हजारों सामाजिक कार्यकर्ता, राजनैतिक कार्यकर्ता, व्यवसायी, पेशेवर लोग और उद्योगपति ऐसे हैं जो नानाजी के साथ अपने जुड़ाव को अत्यधिक महत्व देते हैं। आने वाले लोगों को अपना मुरीद बना लेने की उनकी क्षमता अपरिमित थी। नानाजी नहीं रहे। लेकिन उन्होंने जिन संस्थानों का सृजन किया और अपने पीछे जो मित्र व प्रशंसक छोड़ गए हैं, वे लगातार उनसे प्रेरित होते रहेंगे। ■

लेखक परिचय

अरुण जेटली *उन गिने-चुने छात्र नेताओं में से हैं जिन्होंने आपातकाल के विरुद्ध महती भूमिका निभाई थी। केंद्र में वाजपेयी सरकार में वह कई महत्वपूर्ण विभागों के मंत्री रहे। भाजपा में वह कई महत्वपूर्ण पदों पर रह चुके हैं। संप्रति, वह राज्यसभा में विपक्ष के नेता हैं।*